महैला स्त्री॰ कर्म॰। स्थूलैलायाम् (बड़एलाची) राजनि॰।

महोक्ष पु॰ महान् उक्षा अच् समा॰। वृहद्वृषे अमरः। "महोक्षं वा महाजं वा श्रोत्रियाय प्रकल्पयेत्" मनुः।

महोटी स्त्री महान्ति फलापेक्षया स्थूलानि उटानि पर्णान्यस्याः ङीप्] वृहत्यां क्षुपभेदे भावप्र॰।

महोत्पल पु॰ कर्म॰। १पद्मे, २सारसपक्षिणि च अमरः।

महोत्सव पु॰ कर्म॰। सन्ततसुखसम्पादकव्यापारे।

महोत्साह त्रि॰ महान् उत्साहो यस्य। अत्यन्तोद्यमयुक्ते महोद्यमोऽप्यत्र।

महोदधि पु॰ कर्म॰। समुद्रे

महोदय पु॰ महान् उदयो वृद्धिराधिपत्यं वा यत्र। १कान्यकुब्जदेशे। २तद्देशस्थे पुरभेदे न॰। ३मोक्षे पु॰मेदि॰ ४स्वामिनि पु॰हेमच॰। "अमार्कपाते श्रवणम्" इत्यादि लक्षणात् स्मृत्युक्तार्द्धोदययोगात् "किञ्चिदूने महोदयः" इत्युक्ते किञ्चिदूने ५योगभेदे पु॰। ६नागबलायां स्त्री राजनि॰।

महोदरी स्त्री॰ महदुदरं यस्याः। १शतमूल्याम् भावप्र॰। २वृहदुदरयुक्ते त्रि॰। [त्रि॰।

महोन्नत पु॰ कर्म॰। १तालवृक्षे भावप्र॰। २अत्यन्तोन्नतियुक्ते

महोरग पु॰ कर्म॰। वृहत्सर्पभेदे महोरगाकारोऽस्त्यस्य अच्। २तगरमूले न॰ रत्नमा॰।

महोल्का स्त्री कर्म॰। वृहदुल्कायाम्।

महौषध न॰ कर्म॰। १शुण्ठ्याम् २लशुने ३वाराहीकन्दे वत्सनाभे ४विषे, ५भूम्याहुल्यके राजनि॰ ६पिप्पल्याम् शब्दच॰ ७अतिविषायाम् अमरः ८वीर्य्यवदौषधमात्रे च।

महौषधि स्त्री कर्म॰। १दूर्वायां २लज्जालुक्षुपे शब्दच॰। "सहदेवी तथा व्याघ्री बला चातिबला त्वच। शङ्खपुष्पी तथा सिंही अष्टमी च सुवर्चला। महौषध्यष्टकं प्रोक्तम्" इत्युक्ते ३देवादीनां स्नानीयद्रव्यभेदे। वा ङीप्। ४श्वेतकण्टकार्य्यां ५ब्राह्म्यां ६कटुकायाम् ७अतिविषायाञ्च राजनि॰ ८हिलमोचिकायाम् त्रिका॰।

महौषधिगण पु॰ "पृश्निपर्णी श्यामलता भृङ्गराजः शताशतावरी। गुडूची सहदेवी च महौषधिगणः स्मृतः" शब्दच॰उक्ते पृश्निपर्ण्यादौ ओषधिगणे। [अमित ममे।

मा शब्दे अक॰ माने सक॰ जु॰ आ॰ अनिट्। मिमीते

मा माने अदा॰ प॰ सक॰ अनिट्। माति अमासीत्।

मा माने दि॰ ङित् आ॰ सक॰ अनिट्। मायते अमास्त।

मा अव्य॰ ङिदनुबन्धात् दैवादिकात् आदादिकाद्वा माधातोः क्विप्। १वारणे। धातोर्ङित्त्वेन शब्दे ङित्त्वव्यवहारात् "न माङ्योगे" पा॰ ङिदनुबन्धधातुनिष्पन्नयोगे न अडागमः तद्भिन्नयोगे तु स्यादेव "मा निषाद। प्रतिष्ठां त्वमगमः" इति रामायणम्। मा-क-टाप्। २लक्ष्म्याम् मेदि॰ ३मातरि च स्त्री। मा-सम्प॰भावे क्विप्। ४माने स्त्री शब्दर॰।

मांस न॰ मन-स दीर्घश्च। "मांसं भक्षयितामुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम्। इति मांसस्य मासत्वम्" मनूक्ते प्राणिदेहस्थशोणितपरिपाकजे धातुभेदे भावप्रकाशे मांसवर्गे तद्गुणाः उक्ता दृश्याः। पाकपचनशब्दं परे समासेऽस्यान्त्यलोपः "मांस्पचन्या उखायाः" महाभाष्यम्।

मांसच्छदा स्त्री मांसं छादयति छद-णिच्-अच् ह्रस्वः। मांसरोहिण्यां लतायाम् राजनि॰।

मांसज न॰ मांसाज्जायते जन-ड। देहस्थे मांसजन्ये मेदसि हेमच॰। असृक्करशब्दे दृश्यम्।

मांसदलन पु॰ मांसं प्लीहात्मकं मांसं दलयति दल-णिच्-ल्यु। प्लीहघातकवृक्षे शब्दच॰। [राजनि॰।

मांसद्राविन् पु॰ मांसं द्रावयति णिच्-णिनि। अम्लवेतसे

मांसपेशि स्त्री ६त॰। गर्भस्थावयवभेदे। वा ङीप् तत्रैव भावप्र॰। [राजनि॰।

मांसफला स्त्री मांसमिव कोमलं फलं यस्याः। वार्त्ताक्याम्

मांसमासा स्त्री मस-परिणामे घञ् मांसस्य परिणामो यस्याः ५ ब॰। माषपर्ण्याम् राजनि॰।

मांस्रोहिणी स्त्री मांसं रोपयति रुह-णिच् णिनि वा न पुक्। सुगन्धिद्रव्यभेदे (चामकषा)। राजनि॰।

मांसल त्रि॰ मांस+बलवत्यर्थे लच्। १बलवति अमरः। २स्थूले ३पुष्टे च। [राजनि॰।

मांसलफला स्त्री मांसलं पुष्टं फलमस्याः। वार्त्ताक्याम्

मांससार पु॰ ६त॰। मेदसि राजनि॰। मांसस्नेहादयोऽप्यत्र

मांसहासा स्त्री मांसेन हस्यते कर्मणि घञ्। देहस्थचर्मणि शब्दर॰। [(कसाइ) अमरः।

मांसिक त्रि॰ मांसं पण्यमस्य ठक्। मांसविक्रयोपजीविनि।

मांसिनी स्त्री मांसस्तदाकारस्तद्धेतुत्वं वाऽस्त्यस्याः इनि। जटामांस्याम् राजनि॰।

मांसी स्त्री मांसमस्त्यस्य अच् गौ॰ ङीष्। १जटामांस्याम् २कक्कोल्याञ्च मेदि॰ ३मांसच्छदायां राजनि॰।

मांसेष्टा स्त्री मांसमिष्टं यस्याः। वल्गुलायां खगभेदे राजनि॰

माकन्द पु॰ माति मा-क्विप् माः परिमितः कन्दोऽस्य।